रात्रि क्लास 13/7/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बच्चों को सदैव हर्षित रहना चाहिए। मुस्कराते रहना चाहिए; क्योंकि बाप द्वारा इतना ऊँच ते ऊँच वरसा पाते हो। अगर ठीक रीति से पुरुषार्थ करो तो। ऐसे बहुत बच्चे हैं जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं। जब बच्चे समझाते हैं जैसे कहते हैं तुम अपने बाबा (दादा) को भगवान कहते हो। तो चिरंजीवी लाल बच्चे ने अच्छा सुनाया कि ऐसे जो कहते हैं उनको हम कहते हैं तुम कुत्ते–बिल्ले, कच्छ–मच्छ को भगवाान कहते हो, हम तो फिर भी मनुष्य को कहते हैं। बच्चे ने रेसपाण्ड अच्छा दिया। पढ़ाने वाले से भी पढ़ने वाले ऊँच जा सकते हैं। यह तो कॉमन बात है। यह बच्चा भी अच्छा खुशी में रहते हैं। ऐसे2 बच्चे सेन्टर भी चला सकते हैं। है बहुत सहज। सेकण्ड का ज्ञान है। सेकण्ड भी चपटी पर है। सेकण्ड में तुम बाप से वरसा पाते हो। तुमको समझाया जाता है दो बाप हैं। एक हद का दूसरा बेहद का। वह है हद के क्रियटर, वह बेहद का क्रियटर। दोनो से चपटी में वरसा मिलता है। बाप माना वरसा। यह बच्चा पैदा हुआ वारिस पैदा हुआ। यह भी अपन को समझते हैं हम आत्मा हैं। तो बाप से वरसा मिलता है। शिवबाबा की जयन्ती भी मनाते हैं। बाबा तो जरूर कहते हैं ना। उनका नाम सदैव शिव ही है। शिवबाबा के तुम बच्चे बने हो तो बेहद का वरसा मिलता है। सिर्फ–किसकी समझ में बैठे। पत्थर बुद्धि है ना। भारत ही था और कोई धर्म नहीं था। कितना गपोडे लगा दिये हैं। बाप आकर समझाते हैं। भक्ति मार्ग गपोड़ा मार्ग है। एमआबजेक्ट कोई है नहीं। तो गपोड़े ही ठहरे। बाप तो आकर स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। यह ल0 ना0 विश्व के मालिक हैं ना। ज़रूर ऐसी पढ़ाई पढ़ी है। ऐसे काम किये हैं। राजयोग भी मशहूर है। जरूर आगे जन्म में राजयोग सीख राजाएँ बने हैं। संगमयुग पर ही बाप आते हैं। समझाना भी सहज लगता है; परन्तु पत्थर बुद्धि के समझ में नहीं आता। तुम हो ब्राहमण। यह भी सहज समझाना है। विराट रूप से भी बाजोली सिद्ध होता है। विष्णु को ही विराट रूप में ले जाते हैं। यह भी समझते विष्णु 4 भुजा वाला दो मेल के दो फिमेल की बाहें हैं। चतुर्भुज डान्स भी करते हैं। चार भुजाओं वाला तो कोई होता नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा है ना। बच्चे वृद्धि को पाते रहते हैं। कितने भुजाएँ हो जावेंगे। एडम को कितनी भुजाएँ होंगी। 500करोड़ आदमी तो दस सौ करोड़ भुजाएँ हो जावेंगी। अभी तुम बच्चे समझ गये हो भक्ति मार्ग में तो वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ एनर्जी, वेस्ट ऑफ मनी गई। बाप अभी बिल्कुल राइट समझाते हैं। तुम मनुष्य से देवता बनते हो ना। आधा कल्प टाइम वेस्ट हुआ भक्ति का। भक्तिमार्ग का टाइम वेस्ट दुख भी बहुत। एनर्जी भी चली जाती है। आयु भी कम। अकाले मृत्यु हो जाती है। तुम समझते हो यह पुराना छी छी घर है। नई और पुरानी में फर्क तो है ना। बाप भी कहते हैं मीठे2 बच्चे कलियुग पुराना, सतयुग नया है। सारी पुरानी दुनिया यज्ञ में स्वाहा हो जाती है। कोई भी पुरानी चीज़ वहाँ काम में नहीं आती। आत्मा और शरीर सभी नई बन जाती है। आत्मा तो अविनाशी फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाती है। शरीर तो नया बनता है ना। पुराना ते पुराना सो फिर नया बनता है। इनका बूट तुम्हारी जूती पुरानी ते पुरानी है। फिर इनको नया बूट तुमको नई जूती मिलेगी केमखाव की। सच्चा केमखाव कब काला नहीं होता है। तुमको तो सदैव हर्षित रहना चाहिए। बाप भी तुमको ऐसे हर्षित बनाते हैं। वह सदैव हर्षितपना रहना चाहिए। इनके लिए ही कहेंगे कर्मातीत अवस्था को पाया हुआ है। इनके मुख से सदैव खुशी जलवा दिखाये रहे हैं। सदैव खुशी का जलवा रहना चाहिए। अतिइन्द्रिय सुख हो तब मुकख जलवा दिखाये। वह अवस्था पिछाड़ी को होनी है। मिरवा मौत मलुका शिकार। तुम खुश होते रहेंगे। खुशी से कहते हैं बाबा आकर पावन बनाओ तो जरूर पतित शरीर खलास होगा ना। कालों के काल को बुलाते हो। काल काल महाकाल भी कहते हैं ना। शिव का मंदिर भी है फिर महाकाल का भी मंदिर है। अर्थ नहीं समझते हैं। पढ़ाई तो बड़ी सहज है। बड़ी ते बड़ी भी है। इतना ऊँच ते ऊँच दर्जा कब मिलता नहीं। कितनी भारी पढ़ाई है। 20–22 वर्ष पढ़ाई पढ़ते हो। उनकी चाहिए डबल। 40 वर्ष एक ही बाप, एक ही टीचर पढ़ाते हैं। सर्व का सद्गति दाता एक ही है। गति सद्गति दाता

बाप कहते हैं सभी जीवन मुक्त हो जाते हैं। मुक्ति के बाद फिर जीवनमुक्ति का पार्ट होता है। सर्व का सद्गति दाता। सिर्फ गति नहीं। तुम बच्चे अच्छी रीत जान गये हो। इतने चित्र आदि बनाते हो। धीरे2 झाड़ बढ़ता जावेगा। बच्चों को भी पौक(शौक) तो होता है ना। हद में भी नहीं ठहर जाना चाहिए। बाबा कहाँ भी सर्विस पर भेजो। तैयार रहना चाहिए। ऐसे नहीं यहाँ रहेंगे। बदली होने से हृदय विर्दीण न होना चाहिए। बाबा जानते हैं बेहद में सर्विस करने लायक हैं। कहेंगे यहाँ न यहाँ जाऊँ तो बाबा समझ जाते हैं यह बेहद की सर्विस करने लायक नहीं हैं। भगवान कहे और बहाना बतावें तो नापास हो जावे। भगवान की डायरैक्शन अमल में लानी पड़े। नहीं तो कहेंगे कच्चे। फिर उनको कहा जाता है नाफरमानबरदार। मानेंगे तो कहेंगे फरमानबरदार। बाप सहज कर भेजते हैं ना। वह अपने को नालायक अर्थात् न लायक समझते हैं। बेहद के बाप का डायरेक्शन न माने तो उनको क्या कहेंगे। ऐसे नम्बर वाले बच्चे हैं कहाँ भी कहो चले जावेंगे। कोई खिट2 करेंगे। बेहद की बाप की आज्ञा तो जरूर माननी चाहिए। बेहद का वरसा देते हैं ना। हद के बाप की आज्ञा तो उल्लंघन करते हैं। बेहद की बाप की आज्ञा उल्लंघन करनी न चाहिए; परन्तु राजाई है तो कम पद वाले भी चाहिए ना। कहाँ मालिक, कहाँ साहुकार प्रजा, कहाँ कम प्रजा। तो आज्ञाकारी बन ऊँच ते ऊँच ल0ना0 बनना चाहिए ना। गीत भी है ना प्यार करो चाहे ठुकराओ हम आपके ही मानेंगे। बेहद के बाप का मानने में कल्याण ही होगा। बाप आये हैं विश्व का मालिक बनाने। ऑलमाइटी है ना। आने से ही राजधानी स्थापन करते हैं। और कोई राजधानी थोड़े ही स्थापन करते हैं। बेहद की बादशाही बच्चों को मिलती है। बच्चों को तो सदैव हर्षित रहना चाहिए। ऊँच पद पाने वाले जरूर हर्षित ही रहेंगे। बड़ी भारी स्कालरशिप है। बच्चों को स्कालरशिप मिलती है ना। इसमें पुरुषार्थ करना है। बाप की याद में रहें। भक्त लोग कहते हैं मौत हो तो गंगा का तट हो। यहाँ फिर कहते हैं शिवबाबा ही याद हो। और कोई याद न हो। ममत्व तोड़ देना चाहिए। एक से जोड़ना है। पुराने से तोड़ नया से जोड़ना है। नया सम्बन्ध नई दुनिया से। सुनाते तो बहुत मीठी–मीठी बातें हैं। मीठे–मीठे बच्चे सुनते भी हैं फिर सुनाना चाहिए बच्चों को। ऐसे नहीं समझना शिवबाबा अपनी महिम करते हैं। बच्चे महिमा करते हैं। बाप कहते हैं मैं तो गुलाम हूँ तुम्हारा। नमस्ते करते हैं ना। निराकारी, निरअहंकारी गाया हुआ है ना। ड्रामा का पार्ट है अनेक बार बजाया है। बजाते ही रहेंगे। नई बात थोड़े ही है। यह भी समझते हैं भक्ति की लाना नहीं का जाता। समझाया जाता है। यह तो भक्तिमार्ग फिर भी जरूर होगा। फिर बाप आकर ज्ञान मार्ग में स्वर्ग में ले जावेंगे। यह है खेल। घाटे की बात नहीं। सन्यासी है ही निवृत्ति मार्ग वाले। तो उनसे मेहनत करना ही फालतू है। पहले2 शिव के भक्तों को, देवताओं के भक्तों को समझा सकते हो। उनकी बुद्धि में जल्दी बैठेगा। बाप फरमान करते हैं मीठे2 बच्चे मैसेन्ज पहुँचाते रहो। फिर और समझाना चाहिए तो भल समझाओ। पहले पहले बाप का परिचय। लौकिक–पारलौकिक बाप का समझाओ। तब फिर अलौकिक का समझ सकते हैं; क्योंकि निराकार बाप को रथ चाहिए ना। वरसा मिलता है लौकिक पारलौकिक से। अलौकिक से क्या मिलेगा। हद और बेहद का वरसा दोनों ही हैं। बाकी क्या मिलेगा। हा पारलौकिक का अलौकिक द्वारा मिलेगा। बच्चों को प्वाइंट सुनकर धारण कर फिर सुनानी है। तोते मिसल नहीं समझाना है। हड्डी समझा हुआ हो तो प्रश्न का उत्तर अच्छी रीत दे सके। अच्छा मीठे2 बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडनाइट।

रही हुई प्वाइंट्सः–(11/7/68 रात्रि) यह तो समझते हैं विनाश सिर पर खड़ा है। तुम इसके लिए ही बाप को बुलाते हो। आकर स्वर्ग की स्थापना करो वा सभी को मौत के घाट उतारो। आत्माओं को ले जाओ। सन्यासी भी कहते हैं ब्रह्माकुमारियाँ हिन्दु धर्म का विनाश चाहती हैं। उसका भी जवाब देने वाला हो। बात ठीक है। हिन्दुधर्म बदली देवता बनना है। हिन्दुधर्म का विनाश कर उसके बदली देवी–देवता धर्म की स्थापना करते हैं। ऐसी रेसपान्ड जावे तो सभी कहे वाह स्वर्ग में भी हैं सिर्फ देवताएँ। तो तुम बच्चों को खुशी से शरीर छोड़ना पड़े। ब्रह्मज्ञानी भी ऐसे होते हैं। कहते मुक्ति में जावें। तुम जानते हो ब्रह्म तो हमारा घर है। जबतक हम पतित पावन बाप को याद न करे तो पावन बन न सके।